विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachaar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 19 अंक: 70 जून, 2025

मॉरीशस में संगीत दिवस 2025

संगीत दिवस 2025 के उपलक्ष्य में दिनांक 19 जून, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी : हिंदी गीत एवं ग़ज़ल' के द्वितीय संस्करण का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी भाषा, संगीत और साहित्य पर विचार-विमर्श हुआ। संगीत दिवस में भारत, मॉरीशस, तंज़ानिया तथा अमेरिका के साहित्यकारों, लेखकों तथा कवियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में हैदराबाद विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर डॉ. शशि मुदिराज को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

पृ. 2-3

हिंदी पुस्तक-पठन गतिविधि एवं प्रो. कमल किशोर गोयनका को श्रद्धांजलि

14 अप्रैल, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी पुस्तक-पठन गतिविधि का आयोजन किया। साथ ही, प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार प्रो. कमल किशोर गोयनका के निधन पर श्रद्धांजलि सभा रखी गई। मुख्य अतिथि, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं अनुसंधान मंत्री, माननीय डॉ. कविराज शर्मा सुकों एवं भारतीय उच्चायोग के प्रतिनिधि एवं उप उच्चायुक्त, श्री विमर्श आर्यन ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

पृ. 2

मॉस्को में रूसी छात्रों को सिखाई गई हिंदी की बारीकियाँ

रूस के मॉस्को स्थित रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी फ़ॉर ह्यूमैनिटीज़ में काशी के बी.एच.यू. हिंदी विभाग के प्रो. सत्यपाल शर्मा और डॉ. नीरज धनकड़ ने हिंदी की भाषा-वैज्ञानिकता और साहित्य पर व्याख्यान दिया। दोनों भारतीय शिक्षकों को आर.एस.यू.एच. के अंतरराष्ट्रीय दक्षिण एशियाई अध्ययन केंद्र द्वारा भाषा-विज्ञान प्रोफ़ाइल पर हिंदी सीख रहे रूसी छात्रों के लिए हिंदी प्रशिक्षण विषय पर एक सप्ताह की कार्यशाला और गोलमेज़ चर्चा के लिए आमंत्रित किया गया।

पृ. 5-6

मलेशिया में 12वाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

24 भाषा सहोदरी हिंदी न्यास द्वारा भारत के उच्चायोग, कुआलालंपुर और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सहयोग से 4-5 जून 2025 को मलेशिया में 12वाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। यह दो दिवसीय सम्मेलन कुआलालंपुर स्थित आई.सी.सी.आर कुआलालंपुर के सभागार में संपन्न हुआ, जिसमें भारत और मलेशिया के अनेक हिंदीविद्, शोधकर्ता, लेखक और सांस्कृतिक प्रतिनिधि शामिल हुए।

पृ. 4-5

अमेरिका में 22वाँ द्विवार्षिक अधिवेशन

20 जुलाई, 2023 को बिहार, पटना में कजरी नृत्य और पावस की फुहार के साथ बिहार साहित्य सम्मेलन के 42वें महाधिवेशन की अपार सफलता के बाद 'आनंदोत्सव-सह-सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया। समारोह के उद्घाटनकर्ता और पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. सी पी ठाकुर, दूरदर्शन बिहार के कार्यक्रम-प्रमुख डॉ. राज कुमार नाहर, दीपक ठाकुर तथा सम्मेलन अध्यक्ष ने, गत अधिवेशन में अमूल्य योगदान देने वालों को सम्मानित किया।

पृ. 4

श्रद्धांजलि

हिंदी के वरिष्ठ व प्रख्यात साहित्यकार डॉ. कमल किशोर गोयनका का दिल्ली में मंगलवार 1 अप्रैल, 2025 को निधन हो गया। वे कई साल केंद्रीय हिंदी संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार में बतौर उपाध्यक्ष रहे हैं। डॉ. गोयनका ने दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्राध्यापक के तौर पर करीब 40 साल अध्यापन कार्य किया।

23 अप्रैल, 2025 को प्रख्यात साहित्यकार, कवयित्री और 'पुरवाई' पत्रिका की संपादकीय मंडल की सदस्या श्रीमती जय वर्मा का निधन हो गया। पिछले 50 वर्षों से ब्रिटेन में भाषा एवं साहित्य की सेवा में सक्रियता के साथ कार्यरत रहते हुए, उन्होंने कहानी, कविता, संस्मरण एवं निबंध-लेखन के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान दिया है।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ.14

इस अंक में आगे पढ़ें :

- *सम्मेलन, संगोष्ठी, कर्यशाला, जयंती, परिचर्चा, उत्सव* — *पृ. 3-9*
- *आभासी कार्यक्रम* — *पृ. 9-10*
- *साक्षात्कार* — *पृ.10*
- *लोकार्पण* — *पृ. 11-12*
- *सम्मान एवं पुरस्कार* — *पृ. 12-14*
- *श्रद्धांजलि* — *पृ. 14*
- *सूचना* — *पृ. 15*
- *संपादकीय* — *पृ. 16*

ISSN 1694-2485

हिंदी पुस्तक-पठन गतिविधि एवं प्रो. कमल किशोर गोयनका को श्रद्धांजलि

14 अप्रैल, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी पुस्तक-पठन गतिविधि का आयोजन किया। साथ ही, प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार प्रो. कमल किशोर गोयनका के निधन पर श्रद्धांजलि सभा रखी गई।

प्रथम सत्र में ग्रेड 7, 8 और 9 के विद्यार्थियों ने पठन-गतिविधि में भाग लिया। दूसरे सत्र में चयनित विद्यार्थियों ने मंच से कहानी-पठन किया। पठन-संस्कृति को जीवित रखने तथा विद्यार्थियों में हिंदी पठन के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से यह गतिविधि आयोजित की गई। तीसरे सत्र में प्रो. कमल किशोर गोयनका को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

मुख्य अतिथि, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं अनुसंधान मंत्री, माननीय डॉ. कविराज शर्मा सुकों ने हिंदी को आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस से जोड़ने की माँग की। उन्होंने शिक्षकों से बच्चों की अपेक्षाओं के अनुसार शिक्षण के तरीकों को ढालने का आह्वान किया।

विशिष्ट अतिथि, मॉरीशस के भारतीय उपउच्चायुक्त, श्री विमर्श आर्यन ने पुस्तक-पठन के महत्त्व को रेखांकित किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। ऋषि दयानन्द संस्थान के समन्वयक, डॉ. उदय नारायण गंगू, प्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी लेखक, श्री प्रह्लाद रामशरण तथा लुई नेलाँ सरकारी हिंदी पाठशाला के प्रबंधक, डॉ. शशि दुकन ने प्रो. कमल किशोर गोयनका के बारे में अपनी स्मृतियाँ साझा कीं।

महात्मा गांधी संस्थान की एसोसिएट प्रोफ़ेसर, डॉ. राजरानी गोबिन ने गोयनका जी की पुस्तक 'प्रवासी लेखक अभिमन्यु अनत के पत्र कमल किशोर गोयनका के नाम' की समीक्षा प्रस्तुत की। तत्पश्चात् इस पुस्तक का लोकार्पण माननीय मंत्री डॉ. कविराज शर्मा सुकों, भारतीय उपउच्चायुक्त श्री विमर्श आर्यन एवं श्रीमती सरिता अनत के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

सभी प्रतिभागियों को भारतीय उच्चायोग की ओर से पुस्तकें दी गईं। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। विश्व हिंदी सचिवालय की सहायक संपादक, श्रीमती अंजलि हजगैबी-बिहारी ने मंच-संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी : 'हिंदी गीत एवं ग़ज़ल'

संगीत दिवस 2025 के उपलक्ष्य में दिनांक 19 जून, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी : हिंदी गीत एवं ग़ज़ल' के द्वितीय संस्करण का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी भाषा, संगीत और साहित्य पर विचार-विमर्श हुआ।

संगोष्ठी का शुभारंभ मॉरीशस के रानी भोजपुरी गीत गवाई समूह द्वारा प्रस्तुत हल्दी पर आधारित लोकगीत 'परछावन' से हुआ। इसके पश्चात् महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के वरिष्ठ व्याख्याता श्री सुतीक्ष्ण शर्मा मंगरू ने डॉ. अंजना सिंह सेंगर की ग़ज़ल 'ये भी आशिक है मगर' प्रस्तुत की। श्रीमती गीता भीमराव पांचाले द्वारा 'मोहे लागी लगन तेरे चरणन की' भक्ति-गीत प्रस्तुत की गई।

हिंदी ग़ज़ल-लेखन पर डॉ. अंजना सिंह सेंगर ने अपने भाषण में बताया कि ग़ज़ल भावनाओं की भाषा और समाज का सजीव प्रतिबिंब है। ग़ज़ल सुनाना एक कला है, जो श्रोता के साथ भावनात्मक जुड़ाव स्थापित करती है।

हैदराबाद विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर डॉ. शशि मुदिराज ने अपने भाषण में कहा कि रामचरितमानस के छंद अपने संगीतात्मक प्रभाव के कारण विशेष महत्त्व रखते हैं। तुलसीदास के छंदों में भावों की गहराई और संगीत की मधुरता है।

'हिंदी है हम अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य मंच', तंज़ानिया के संरक्षक श्री आदर्श शर्मा ने रामचरितमानस के सुंदरकाण्ड के दोहों का गायन किया। श्री आनंद चत्तू, श्री यशीराज सन्मुखिया और श्री अक्षय जूरन ने वाद्य-यंत्रों पर संगत किया।

अमेरिका से डॉ. अर्चना पांडा ने 'उजड़ा-उजड़ा, टूटा-टूटा, खाली-खाली मन' गीत को वीडियो के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने घनाक्षरी छंद में कविताएँ व गीत प्रस्तुत किए।

प्रो. विश्वनाथ श्रीखंडे (भारत) ने वेदों में संगीत की चर्चा की और लोकगीतों की जीवंतता पर प्रकाश डाला।

शुभ लगन मंडली (मॉरीशस) द्वारा 'ललना'

नामक पारंपरिक लोकगीत की मनमोहक प्रस्तुति हुई। स्नेहल आर्ट्स एंड एजुकेशन सोसाइटी (भारत) के कलाकारों ने 'ये देश है वीर जवानों का' नामक देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया (भारत) के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री भीमराव पांचाले ने 'हिंदी के प्रचार-प्रसार में ग़ज़ल की भूमिका' विषय पर अपना वक्तव्य देते हुए अपनी दो ग़ज़लें प्रस्तुत कीं।

स्नेहल आर्ट्स एंड एजुकेशन सोसाइटी, भारत के उपाध्यक्ष, श्री रवींद्र सोनवणे ने हिंदी और लोकगीतों के संबंध पर प्रकाश डाला।

समापन-समारोह में डॉ. अंजना सेंगर द्वारा लिखित गीत 'हिंदी भाषा' को श्री मोहरलाल चमन, ओ.एस.के. (मॉरीशस) ने संगीतबद्ध करके गाया। श्रीमती शोभा धमस्कर (भारत) ने भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुत किया। विभिन्न देशों के युवाओं द्वारा 'प्यारी हिंदी' विषय पर आकर्षक गीतों का एक वीडियो पेश किया गया।

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय संस्करण में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने कहा कि यह संगोष्ठी हिंदी की वैश्विक पहचान को सुदृढ़ बनाने का माध्यम है।

भारतीय उपउच्चायुक्त (मॉरीशस) श्री विमर्श आर्यन ने हिंदी गीत और ग़ज़ल द्वारा भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर के संरक्षण की चर्चा की।

मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री धरमबीर गोकुल जी सीएसके ने कहा कि ऐसे आयोजन भाषा-कर्मियों और कलाकारों के बीच आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करते हैं और हिंदी साहित्य की अंतरराष्ट्रीय मान्यता को सुदृढ़ करते हैं।

इस अवसर पर डॉ. अंजना सिंह सेंगर की पुस्तक 'यादों की रियासत', डॉ. सोमदत्त काशीनाथ की पुस्तक 'कुछ वादे किए थे मैंने ज़िंदगी से' तथा डॉ. कीर्ति कुलकर्णी द्वारा लिखित 'मानवता, धर्म और योगी' (हिंदी अनुवाद) का लोकार्पण किया गया।

डॉ. शुभंकर मिश्र, उपमहासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय ने धन्यवाद-ज्ञापन किया तथा श्रीमती अर्चना पांडा ने मंच-संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लेखक-सम्मिलन

21 अप्रैल, 2025 को मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय में एक लेखक-सम्मिलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर न्यूज़ीलैंड के वैलिंग्टन हिंदी विद्यालय की अध्यक्षा श्रीमती सुनीता नारायण का विश्व हिंदी सचिवालय में शुभागमन हुआ।

समारोह के आरंभ में श्रीमती सुनीता नारायण का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया।

इस लेखक-सम्मिलन में मॉरीशस के कुल 18 वरिष्ठ एवं नवोदित हिंदी लेखकों ने भाग लिया। डॉ. हेमराज सुन्दर, प्रो. राजशेखर, डॉ. अलका धनपत, श्रीमती कल्पना लालजी, डॉ. शशि दुकन, डॉ. सुरीति रघुनंदन, श्रीमती सविता तिवारी, श्री दयानंद चेंगी, श्री वशिष्ठ कुमार झमन, श्री अरविंद नेकितसिंह, श्रीमती आरती हेमराज, श्री सहलिल तोपासी, श्रीमती आरती लोचन, डॉ. सोमदत्त काशीनाथ आदि रचनाकारों ने कविताएँ, कहानियाँ, निबंध तथा व्यंग्य-रचनाओं का पाठ करते हुए साहित्य के विविध रंग प्रस्तुत किए।

श्रीमती सुनीता नारायण ने बताया कि वैलिंग्टन हिंदी विद्यालय, न्यूज़ीलैंड में हिंदी शिक्षा को सरल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने मॉरीशस के साहित्यिक वातावरण की सराहना करते हुए हिंदी के माध्यम से दोनों देशों के बीच साहित्यिक और सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस कार्यक्रम के समापन पर श्रीमती कल्पना लालजी ने 'गिरमिटिया महाकाव्य' तथा डॉ. सोमदत्त काशीनाथ ने 'मेरी तितली' तथा कई अन्य पुस्तकें श्रीमती सुनीता नारायण को भेंट कीं।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने लेखक-सम्मिलन की अध्यक्षता करते हुए मॉरीशसीय साहित्यकारों की सक्रियता की प्रशंसा की। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव डॉ. शुभंकर मिश्र तथा अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में डॉ. शुभंकर मिश्र द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, जयंती, परिचर्चा, उत्सव

बेल्जियम में यूरोपीय साहित्यिक सम्मेलन

15 जून, 2025 को वैश्विक भाषा, कला एवं संस्कृति संगठन (Global language Art and Culture Organisation - GLAC), यूरोप ने अपना द्वितीय

यूरोपीय साहित्यिक सम्मेलन (The European Literary Conclave) कोर्टराइक, बेल्जियम में आयोजित किया। कार्यक्रम का संयोजन संस्था के संस्थापक श्री कपिल कुमार (बेल्जियम), श्री विश्वास दुबे (नीदरलैंड) एवं डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना (जर्मनी) ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री वी. नारायणन, काउंसलर (प्रेस, सूचना एवं संस्कृति), भारतीय दूतावास, ब्रुसेल्स, संस्था के संरक्षक श्री तेजेंद्र शर्मा (ब्रिटेन) एवं विश्व मानवाधिकार संगठन के अध्यक्ष, श्री विजय मालिक ने अपनी उपस्थिति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ नीदरलैंड के कवि एवं लेखक श्री विश्वास दुबे के स्वागत-भाषण से हुआ। उन्होंने स्पष्ट किया - "हमारा उद्देश्य साहित्य के माध्यम से विश्व के साहित्य-सेवियों को एकसूत्र में पिरोना है।" डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना ने माँ वीणा वादिनी को नमन करते हुए काव्य-संध्या को आरम्भ किया। श्री कपिल कुमार ने संगठन का महत्त्व बताया - "वैश्विक भाषा, कला एवं संस्कृति संगठन सारे यूरोप को ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण विश्व को एक साथ मिलाकर कुछ अनूठा, कुछ नवीन एवं सार्थक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।" कार्यक्रम के प्रथम भाग का संचालन श्री विश्वास दुबे ने किया। नीदरलैंड के सुप्रसिद्ध युवा कवि एवं साहित्यकार श्री मनीष पांडेय, लंदन से प्रतिष्ठित कवि एवं ग़ज़लकार श्री आशुतोष कुमार, लंदन से सुविख्यात कवि श्री आशीष मिश्रा, डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना, श्री विश्वास दुबे एवं श्री कपिल कुमार ने अपनी कविताएँ एवं ग़ज़ल सुनाईं। श्री तेजेंद्र शर्मा ने आयोजक मंडल को बधाई देते हुए कहा कि बेल्जियम जैसे देश में आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम में इतने सारे देशों से कवियों एवं हिंदी प्रेमी श्रोताओं का शामिल होना पूरी यूरोपियन यूनियन का सम्मिलित होने जैसा है। कार्यक्रम के अंत में श्री वी. नारायणन ने उद्गार किया कि "ये मेरे जीवन का सबसे सुंदर और यादगार दिन है।" हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान के लिए संगठन द्वारा श्री तेजेंद्र शर्मा को बेल्जियम के प्रसिद्ध साहित्यकार 'फ़ादर कामिल बुल्के लिटरेरी आवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. शिप्रा शिल्पी एवं श्री विश्वास दुबे की पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। संगठन द्वारा सभी अतिथियों को प्रशस्ति-पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

साभार : डॉ. शिप्रा शिल्पी, सह संस्थापक, वैश्विक भाषा, कला एवं संस्कृति संगठन

हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा में साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम

हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा ने 19 अप्रैल 2025 को स्प्रिंगडेल पब्लिक लाइब्रेरी, कनाडा में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसकी शुरुआत सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से हुई। आशा बर्मन, इन्दिरा वर्मा, छाया कोटनाला और आशा मिश्रा ने अपनी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। तारा वार्ष्णेय ने हिंदी में सृजनात्मक लेखन पर अपने विचार रखे। पंकज मिश्रा, पीयूष श्रीवास्तव, दीप शुक्ला और अन्य कवियों ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

तकनीकी निदेशक पूनम चंदा ने हिंदी की सौम्यता पर बात की। अंत में डॉ. नरेंद्र ग्रोवर ने कार्यक्रम का समापन वक्तव्य दिया और आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी।

साभार : हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा का फ़ेसबुक पेज

अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, अमेरिका का 22वाँ द्विवार्षिक अधिवेशन

अमेरिका के ओहायो में 2-3 मई, 2025 को आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति (IHA) का 22वाँ द्विवार्षिक अधिवेशन "नई पीढ़ी, डिजिटल युग में हिंदी और भारतीय संस्कृति" विषय के साथ संपन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में स्थानीय नगरपालिकाओं के मेयरों ने "अंतरराष्ट्रीय हिंदी जागरूकता सप्ताह/माह" के उद्घाटन की घोषणा कर हिंदी को बढ़ावा देने में सहयोग प्रदान करने का वचन दिया। अधिवेशन तीन सत्रों में आयोजित हुआ। पहले दिन हाइलैंड हाई स्कूल, मेदाइना में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक झलकियाँ दर्शायी गईं। दूसरे दिन क्वालिटी इन, रिचफ़ील्ड में शैक्षिक सत्र हुआ, जिसमें AI और अन्य डिजिटल उपकरणों के उपयोग से हिंदी सीखने, संरक्षित करने और बढ़ावा देने के उपाय साझा किए गए। प्रतिभागियों को आधुनिक डिजिटल ऐप्स और ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज़ का प्रभावी उपयोग दिखाया गया। अधिवेशन के समापन पर कवि -सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें इंद्रा अवस्थी, अर्चना पांडा और अभिनव शुक्ला ने हास्य, व्यंग्य और सामाजिक विषयों पर कविता प्रस्तुत की। सम्मेलन के दौरान दो पुस्तकें विमोचित हुईं - *"कुछ हम भी लिख गए हैं तुम्हारी किताब में"* और *"नंदिता अभिनव"*। इसके अतिरिक्त, स्थानीय स्वयंसेवकों और IHA सदस्यों को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। अधिवेशन ने हिंदी भाषा की विरासत और भविष्य का उत्सव प्रस्तुत किया। IHA की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. शैल जैन ने ज़ोर देकर कहा कि अमेरिका और अन्य देशों में हिंदी के प्रचार और शिक्षा को सक्रिय बनाना आवश्यक है, ताकि नई पीढ़ी भाषा और संस्कृति दोनों से जुड़ी रहे।

साभार : न्यू इंडिया अब्रोड / क्लिवलैंडपीपल.कॉम

मलेशिया में 12वाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

भाषा सहोदरी हिंदी न्यास द्वारा भारत के उच्चायोग, कुआलालंपुर और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सहयोग से 4-5 जून, 2025 को मलेशिया में 12वाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। यह दो दिवसीय सम्मेलन कुआलालंपुर स्थित आई.सी.सी.आर कुआलालंपुर के सभागार में संपन्न हुआ, जिसमें भारत और मलेशिया के अनेक हिंदीविद्, शोधकर्ता, लेखक और सांस्कृतिक प्रतिनिधि शामिल हुए।

समापन समारोह में भारत के उच्चायुक्त श्री बी. एन. रेड्डी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

उन्होंने उल्लेख किया कि उच्चायोग मलेशिया में हिंदी के कार्यक्रमों को निरंतर समर्थन दे रहा है।

सम्मेलन के उद्घाटन-सत्र में डॉ. अशोक पांड्या (संपादकीय मंडल के सदस्य, 'भाषा सहोदरी' पत्रिका) ने स्वागत-भाषण देते हुए उच्चायोग एवं आई.सी.सी.आर कुआलालंपुर के प्रति आभार व्यक्त किया।

विभिन्न सत्रों में हिंदी विद्वानों, शिक्षाविदों और साहित्यकारों ने हिंदी भाषा के संरचनात्मक विकास, प्रवासी संदर्भों, शिक्षण-पद्धतियों, हिंदी-शिक्षण में आधुनिक तकनीक के उपयोग जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

सम्मेलन में भाषा सहोदरी पत्रिका के वार्षिकांक का लोकार्पण किया गया। भाषा सहोदरी न्यास तथा साझेदार संस्थाओं द्वारा संचालित यह सम्मेलन प्रवासी विश्व में हिंदी के विस्तार की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है।

साभार : भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् कुआलालंपुर का इन्स्टाग्राम / नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् कुआलालंपुर का फ़ेसबुक

न्यू जर्सी में 20वाँ दक्षिण एशियाई नाट्य महोत्सव

13-15 जून, 2025 को न्यू ब्रुन्स्विक पर्फ़ोमिंग आर्ट्स सेंटर, न्यू जर्सी में 20वें दक्षिण एशियाई नाट्य महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत 'द ट्वेल्व' तथा 'लंगड़ी तांग' हिंदी नाटकों का मंचन हुआ। डॉ. मोहन अगाशे मुख्य अतिथि रहे और विशिष्ट अतिथि आदी रॉय रहे। 'लंगड़ी तांग' व्यंग्य के विशेषज्ञ हरिशंकर परसाई का एक तीखा हिंदी व्यंग्य है, जो हंसी-मज़ाक से लिपटी है और इसका निर्देशन प्रतिभाशाली अमीया मेहता ने किया है। प्रयोग थिएटर ग्रुप के कलाकार - गौरव मेहता, नीरज शर्मा, आंचल शर्मा, प्रभा अग्रवाल, मितल मोदी, धनंजय निककावाडे, अरिन शोमे, रौनक पटेल, हिमांशु शर्मा, मनीष चतुर्वेदी, मोहित मित्तल और उत्कर्ष दीक्षित ने अपने हुनर और जुनून के साथ इस नाटक को जीवंत बना दिया।

साभार : प्रयोग थिएटर ग्रुप का फ़ेसबुक पेज

'लोक साहित्य : जैसा लोकमन में' - राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं संगीत-संध्या

कोलकाता स्थित भारतीय भाषा परिषद् में 5 अप्रैल, 2025 को "लोक साहित्य : जैसा लोकमन में" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का निर्देशन प्रोफ़ेसर राजश्री शुक्ला ने किया तथा संचालन पूजा गुप्ता द्वारा किया गया। संगोष्ठी में लोककथाओं, लोकगीतों, लोक परंपराओं आदि के महत्त्व पर विचार प्रस्तुत किए गए। वक्ताओं ने लोक-साहित्य को जनजीवन की संवेदनाओं का जीवंत दस्तावेज़ बताते हुए उसे शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने पर विशेष बल दिया। संगोष्ठी के उपरांत आयोजित हिंदी संगीत-संध्या में पारंपरिक लोक-गीतों ने श्रोताओं को लोक-संस्कृति से सीधे जोड़ने का कार्य किया। इस अवसर पर लोक-साहित्य के समकालीन महत्त्व और भविष्य की दिशा पर सार्थक विमर्श हुआ। यह प्रमाणित हुआ कि लोक-साहित्य भी हिंदी को राष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठा दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

साभार : भारतीय भाषा परिषद् की आधिकारिक वेबसाइट

दो-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी : 'हिंदी भाषा का वैश्विक परिदृश्य'

दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलिज, हिंदी विभाग द्वारा 16–17 अप्रैल, 2025 को "हिंदी भाषा का वैश्विक परिदृश्य : आर्थिक, राजनयिक और शैक्षणिक संदर्भ" विषय पर दो-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन-सत्र में प्रमुख वक्ता प्रो. वी.के. जगन्नाथन (पूर्व निदेशक, इग्नु), प्रो. निरंजन कुमार (डीन, दिल्ली विश्वविद्यालय) और वरिष्ठ पत्रकार श्री विनोद अग्निहोत्री ने हिंदी की अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता, शिक्षा-दर्शन और डिजिटल संसाधनों के विस्तार पर अपने विचार रखे। दूसरे दिन के शैक्षणिक-सत्र में जापान के मूसाशिनो विश्वविद्यालय, जर्मनी के हैम्बर्ग विश्वविद्यालय तथा चीन के क्वांग्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने ऑनलाइन एवं प्रत्यक्ष माध्यम से हिस्सा लिया। उन्होंने एशिया, यूरोप और प्रशांत क्षेत्र में हिंदी-शिक्षण की स्थिति, चुनौतियों और अवसरों पर प्रकाश डालते हुए शिक्षक-अदला-बदली कार्यक्रम तथा अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक साझेदारी को सुदृढ़ करने की आवश्यकता बताई।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र में यह घोषणा की गई कि चयनित शोध-पत्रों का संकलन शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

साभार : डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलिज की औपचारिक वेबसाइट

मॉस्को में रूसी छात्रों को सिखाई गई हिंदी की बारीकियाँ

रूस के मॉस्को स्थित रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी फ़ॉर ह्यूमैनिटीज़ में काशी के बी.एच.यू. हिंदी विभाग के प्रो. सत्यपाल शर्मा और डॉ. नीरज धनकड़ ने हिंदी की भाषा-वैज्ञानिकता और साहित्य पर व्याख्यान दिया। दोनों भारतीय शिक्षकों को आर.एस.यू.एच. के अंतरराष्ट्रीय दक्षिण एशियाई अध्ययन केंद्र द्वारा भाषा-विज्ञान प्रोफ़ाइल पर हिंदी सीख रहे रूसी छात्रों के लिए हिंदी प्रशिक्षण विषय पर एक सप्ताह की कार्यशाला और गोलमेज़ चर्चा के लिए आमंत्रित किया गया। रूसी छात्रों को हिंदी भाषा के प्रयोग और हिंदी साहित्य से परिचित कराया

गया। डॉ. नीरज धनकड़ ने रूसी साहित्य के आधुनिक लेखकों के कार्यों का हिंदी में अनुवाद करने के अपने अनुभव के बारे में बताया। प्रो. सत्यपाल शर्मा ने हिंदी व्याकरण और आधुनिक हिंदी लघुकथा की विशेषताओं पर कुल छः व्याख्यान दिए। छात्रों ने इस अवसर पर महादेवी वर्मा की कविताएँ प्रस्तुत कीं।

साभार : रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी फ़ॉर ह्यूमैनिटीज़ का फ़ेसबुक पेज

नई दिल्ली में 'साहित्य मंच' का आयोजन

25 जून, 2025 को साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा आयोजित 'साहित्य मंच' कार्यक्रम में तीन कथाकारों ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। सर्वप्रथम योगिता यादव ने अपनी कहानी 'गंध' प्रस्तुत की, जो सारिका और अभिनव के बीच एक प्रेम-कहानी पर आधारित है। सारिका और उसके आस-पास के परिवेश के द्वारा लेखिका ने समाज में स्त्रियों के मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे को उठाया। हरियश राय ने अपनी कहानी 'अंतिम पड़ाव' में सोना घोष के ज़रिए वृंदावन में विधवा स्त्रियों के जीवन की त्रासदी को रेखांकित किया। हरिसुमन बिष्ट की कहानी 'अदृश्य पंखों पर उड़ान' दादी और पोती के संवादों के सहारे पहाड़ की स्त्री के जीवन-संकट को उकेरती है। तीनों कहानियों में स्त्री केंद्र में थी, जो समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही थी। अकादेमी के उपसचिव देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया।

आभार : श्री के. श्रीनीवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी (प्रेस विज्ञप्ति)

राजकोट में राजभाषा हिंदी कार्यशाला

7 अप्रैल, 2025 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, राजकोट में राजभाषा हिंदी के प्रभावी अनुप्रयोग पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें आमंत्रित वक्ता श्री विशेष त्रिपाठी ने राजभाषा नीति के प्रमुख प्रावधान, कार्यालयी दस्तावेज़ों में हिंदी के मानकीकृत प्रयोग, तकनीकी शब्दावली, पत्राचार शैली तथा नोटशीट-लेखन के व्यावहारिक पक्षों पर मार्गदर्शन दिया।

प्रतिभागियों ने कार्यस्थल पर आने वाली भाषाई चुनौतियों से जुड़े प्रश्न पूछे, जिनका समाधान वक्ता ने व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया। AIIMS राजकोट द्वारा जारी सूचनाओं और उपलब्ध दृश्य सामग्री के अनुसार, कार्यशाला ने संस्थान में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। कार्यक्रम में नियमित प्रशिक्षण व दस्तावेज़-मानकीकरण की प्रक्रिया को जारी रखने का संकल्प भी व्यक्त किया गया।

साभार : अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, राजकोट की औपचारिक वेबसाइट - संस्थागत सूचना-पृष्ठ एवं आधिकारिक सोशल मीडिया पोस्ट, 7 अप्रैल 2025

आर्यन्स पब्लिक स्कूल में हिंदी कार्यशाला संपन्न

आर्यन्स पब्लिक स्कूल, हुबली, कर्नाटक में 11 अप्रैल, 2025 को शिक्षकों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा 1 से 10 तक के शिक्षकों ने सहभागिता की। शिक्षकों को संवादात्मक गतिविधियों तथा व्यावहारिक अभ्यास-कार्यों के माध्यम से हिंदी-शिक्षण की नवीन विधियाँ समझाई गईं। छात्रों में भाषा-कौशल के विकास, शब्द-भंडार का विस्तार तथा अभिव्यक्ति-क्षमता की वृद्धि पर विशेष बल दिया गया। यह प्रशिक्षण शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के साथ-साथ विद्यालय के स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में कारगर सिद्ध हुआ।

साभार : विद्यालय का आधिकारिक सोशल मीडिया पोस्ट (इंस्टाग्राम/फेसबुक), 11 अप्रैल 2025

ग्वांगज़ू में संगीत के माध्यम से हिंदी सीखने की कार्यशाला

दिनांक 14 जून, 2025 को ग्वांगज़ू स्थित भारत के महावाणिज्य दूतावास ने विश्व हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर 'पाठशाला' श्रृंखला के तहत "संगीत के माध्यम से हिंदी सीखें" विषय पर एक निःशुल्क कार्यशाला आयोजित की, जिसका उद्घाटन कौंसुल जनरल श्री शम्भु हक्की ने किया।

कार्यशाला का संचालन प्रख्यात भारतीय संगीतकार डॉ. जैदेब मुखर्जी ने किया। वे दक्ष गायक, तबला वादक और हारमोनियम में निपुण हैं तथा शास्त्रीय, अर्ध-शास्त्रीय, भक्ति और सुगम संगीत में विशेषज्ञता रखते हैं। उन्होंने प्रसिद्ध भारतीय कवियों की हिंदी रचनाओं को संगीत के माध्यम से सीखने की तकनीकें सिखाईं।

'पाठशाला' कार्यशाला श्रृंखला ग्वांगज़ू के महावाणिज्य दूतावास की एक विशेष पहल है, जिसमें विभिन्न उम्र और स्तर के प्रतिभागियों ने भारतीय संगीत की बुनियादी संरचना और हिंदी की ध्वन्यात्मक विशेषताओं को अनुभव किया। यह कार्यक्रम हिंदी भाषा के अंतरराष्ट्रीय प्रचार और सांस्कृतिक कूटनीति में एक महत्त्वपूर्ण पहल के रूप में सामने आया।

साभार : भारत के महावाणिज्य दूतावास, ग्वांगज़ू की औपचारिक वेबसाइट

तिरुवनंतपुरम में हिंदी कार्यशाला सम्पन्न

दिनांक 15 मई, 2025 को राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (NCESS), तिरुवनंतपुरम में हिंदी भाषा को सशक्त बनाने तथा राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के उद्देश्य से एक विशेष हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई,

जिसमें मुख्य अतिथि श्री षोजो लोबो, वरिष्ठ राजभाषा प्रबंधक, केनरा बैंक (तिरुवनंतपुरम) ने "कंठस्थ 2.0 एवं राजभाषा कार्यान्वयन के विविध पहलू" पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में हिंदी को अपनाने से कार्य-प्रवाह अधिक सुव्यवस्थित होगा।

कार्यशाला में उपस्थित वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों और प्रशासनिक कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से सहभागिता की तथा हिंदी में निपुणता बढ़ाने हेतु व्यावहारिक सुझावों पर चर्चा की। प्रतिभागियों ने यह संकल्प दोहराया कि राजभाषा नीति को प्रभावपूर्ण रूप से लागू करने के लिए वे सामूहिक प्रयास करेंगे।

साभार : राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र का फ़ेसबुक

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में क्षमता संवर्धन कार्यशाला

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के श्री विजय पुरम स्थित शहर, जीएसएस जंगलीघाट में 15 अप्रैल, 2025 से हिंदी शिक्षकों के लिए दस दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला का शुभारंभ हुआ, जो 26 अप्रैल, 2025 तक चली। यह कार्यशाला राज्य शिक्षा संस्थान, शिक्षा सदन, श्री विजय पुरम द्वारा केंद्रीय हिंदी शिक्षा संस्थान, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित हुई।

उद्घाटन-सत्र में हैदराबाद स्थित केंद्रीय हिंदी शिक्षा संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक प्रोफ़ेसर गंगाधर वानोडे ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। आगरा स्थित केंद्रीय हिंदी शिक्षा संस्थान के निदेशक प्रोफ़ेसर सुनील बाबूराव कुलकर्णी ने दूरस्थ माध्यम से प्रतिभागियों को संबोधित कर शिक्षण-कौशल सुदृढ़ करने का आह्वान किया। राज्य शिक्षा संस्थान की प्राचार्या सुश्री संगीता चंद ने शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में इस कार्यशाला के महत्त्व को रेखांकित किया।

हैदराबाद से सह-प्राध्यापक डॉ. फटराम नायक तथा आगरा से सहायक प्राध्यापक डॉ. मयंक त्रिपाठी ने संसाधक के रूप में मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस. राधा द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन किया गया।

साभार : डिजिटल अंडमान का फ़ेसबुक

देहरादून में राजभाषा प्रशिक्षण कार्यशाला

वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के हिंदी अनुभाग के सौजन्य से 21 मई, 2025 को राजभाषा प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन-सत्र में संस्थान के कुलसचिव श्री आर. आनंद ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कार्यशाला से अधिकतम लाभ उठाने की माँग की।

कार्यशाला का संचालन श्री अंकुर त्रिपाठी, सहायक हिंदी (राजभाषा) ने किया। उन्होंने संसदीय राजभाषा सहमति की समीक्षा की, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 की जानकारी दी और हिंदी में त्रैमासिक प्रतिवेदन-प्रपत्र भरने और रिपोर्टिंग करने का प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में श्री दिनेश इंद्र, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, ने सहयोग प्रदान किया।

स्रोत : वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून की वेबसाइट

ब्रिटेन में हिंदी सुलेख कार्यशाला का आयोजन

ब्रिटेन में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की श्रृंखला के अंतर्गत 'इंडियन सोसायटी' के तत्त्वावधान में 30 अप्रैल, 2025 को दोपहर 1:00 से 2:00 बजे तक हिंदी सुलेख कार्यशाला का सफल आयोजन NB.1.02, डॉकलैंड्स परिसर में किया गया। कार्यशाला का आरंभ देवनागरी लिपि के इतिहास, उसकी सांस्कृतिक महत्ता और सौंदर्य-परंपरा के परिचय से हुआ, जिसके बाद प्रतिभागियों को मूल अक्षरों एवं शब्दों के लेखन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिभागियों ने पारंपरिक भारतीय डिज़ाइन और अपनी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के संयोजन से स्वयं की सुलेख-कृतियाँ तैयार कीं। यह आयोजन केवल एक कलात्मक अभ्यास तक सीमित न रहकर हिंदी भाषा के उत्सव के रूप में उभरा।

साभार : ईस्ट लड़ना स्टूडेंट्स यूनियन की वेबसाइट / यूनिवर्सिटी ऑफ़ ईस्ट लंदन इंडियन सोसायटी का फ़ेसबुक एवं इन्स्टाग्राम

दिल्ली में 'बोलचाल की हिंदी और कार्यालयीन भाषा' विषय पर कार्यशाला

साहित्य अकादेमी, दिल्ली में 10 जून, 2025 को 'बोलचाल की हिंदी और कार्यालयीन भाषा' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर कार्यशाला विशेषज्ञ के रूप में पूर्व राजनयिक श्रीमती सुनीता पाहूजा को आमंत्रित किया गया। इस विचारोत्तेजक कार्यशाला में श्रीमती पाहूजा ने लगभग 35 वर्ष तक की अपनी सरकारी सेवा और 6 वर्षों के विदेश में की गई सेवा के अनुभव के आधार पर बोलचाल की सहज हिंदी और कार्यालय की औपचारिक भाषा के बीच की दूरी को अत्यंत रोचक ढंग से समझाने का प्रयास किया। अकादेमी के उपसचिव, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश सहित लगभग 20 पदाधिकारी इस कार्यशाला में उपस्थित थे, जिन्होंने अपने विचार साझा करते हुए कार्यशाला को संवादात्मक बनाए रखा और जिनकी जिज्ञासाओं ने संवाद को और भी समृद्ध बनाया।

श्रीमती सुनीता पाहूजा की रिपोर्ट

वर्धा में महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जयंती

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 9 अप्रैल को महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जयंती मनायी गयी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने राहुल सांकृत्यायन की मूर्ति पर पुष्पमाला अर्पित की। कार्यक्रम में पुस्तकालयाध्यक्ष मैत्रेयी घोष, सहपुस्तकालयाध्यक्ष श्री आनंद मंडित मलयज, डॉ. गुंजन जैन, शील खांडेकर, अमित घोडे, सोनू पोहनकर, जयश्री, आनंद विश्वकर्मा, रामेश्वर, उपेन्द्र, योगेश, और पुंडरिक वाघमारे समेत विद्यार्थी उपस्थित थे। महापंडित राहुल सांकृत्यायन का जन्मदिन हिंदी साहित्य और संस्कृति के प्रति उनके महान योगदान को याद करने का अवसर है। वे भारतीय साहित्य, दर्शन, और संस्कृति के क्षेत्र में एक अद्वितीय व्यक्तित्व माने जाते हैं। उन्होंने संस्कृत, हिंदी और अन्य भाषाओं का गहन अध्ययन किया, जिससे भारतीय समाज और संस्कृति को समझने में उन्हें गहरी जानकारी प्राप्त हुई। राहुल सांकृत्यायन का साहित्य, धर्म, दर्शन, और समाज के विभिन्न पहलुओं में गहरा योगदान था। उन्होंने अपनी यात्राओं, अनुवादों और लेखन के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। वे भारतीय समाज के समग्र विकास के समर्थक थे और उनकी कृतियाँ आज भी हमारे समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर है।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का फ़ेसबुक पेज

महावीर प्रसाद द्विवेदी की जयंती तथा डॉ. सुषमा कुमारी की पुस्तक 'पटकथा लेखन में कौशल अभिव्यक्ति' का लोकार्पण

9 मई, 2025 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में द्विवेदी-जयंती के उपलक्ष्य में पुस्तक-लोकार्पण एवं लघुकथा-गोष्ठी का आयोजन किया गया। सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि अपने युग की साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को दिशा और दृष्टि प्रदान करने वाले युग-प्रवर्तक साहित्यकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। हिंदी भाषा और साहित्य के महान् उन्नायकों में वरेण्य आचार्य द्विवेदी के साहित्यिक अवदानों के कारण ही उनके युग को 'द्विवेदी-युग' के रूप में स्मरण किया जाता है।

इस अवसर पर लेखिका डॉ. सुषमा कुमारी की पुस्तक 'पटकथा-लेखन में कौशल अभिव्यक्ति' का लोकार्पण भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी विकास वैभव ने किया। अपने उद्गार में उन्होंने कहा कि लेखन के प्रति आवश्यक निष्ठा और श्रम का अभाव हो रहा है। डॉ. सुषमा कुमारी की पुस्तक में अपेक्षित निष्ठा और श्रम लक्षित होता है।

बिहार विधान परिषद् की पूर्व सदस्य और सुप्रसिद्ध विदुषी प्रो. किरण घई ने कहा कि कृत्रिम प्रज्ञा के इस आधुनिक युग में श्रम से सामग्री जुटाकर 'पटकथा-लेखन' पर जो पुस्तक लिखी गई है, उसका स्वागत होना चाहिए। वरिष्ठ कवयित्री डॉ. भावना शेखर ने आचार्य द्विवेदी पर अपना आलेख पढ़ा। स्वागत संबोधन में सम्मेलन के साहित्यमंत्री भगवती प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि द्विवेदी जी हिंदी के एक ऐसे कीर्ति-स्तम्भ थे, जिसपर आधुनिक हिंदी का महल खड़ा हुआ। सम्मेलन के उपाध्यक्ष डॉ. शंकर प्रसाद और डॉ. मधु वर्मा तथा जगत नारायण महिला महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. मधुप्रभा सिंह, अवकाश प्राप्त संयुक्त सचिव चंद्रशेखर प्रसाद सिंह, प्रो. नागेन्द्र कुमार शर्मा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर एक लघुकथा-गोष्ठी का आयोजन भी हुआ। मंच का संचालन ब्रह्मानन्द पाण्डेय ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन प्रो. सुशील कुमार झा ने किया।

आभार : डॉ. अनिल सुलभ

नई दिल्ली में 'मंडल ध्वनि' पुस्तक पर परिचर्चा तथा कविता-पाठ

29 मई, 2025 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में 'मंडल ध्वनि' पुस्तक पर परिचर्चा तथा कविता-पाठ का आयोजन हुआ। प्रो. अलका त्यागी द्वारा संपादित 'मंडल ध्वनि', प्रो. मालाश्री लाल द्वारा मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखित काव्य-संग्रह 'Mandals of Time'

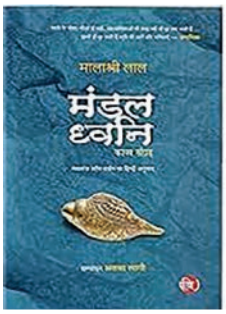

का हिंदी अनुवाद है। पचहत्तर कविताओं का यह संग्रह अनुभवों और अंतर्दृष्टियों की एक समृद्ध बुनावट प्रस्तुत करता है, जिसमें पौराणिक और समकालीन, अतीत और वर्तमान तथा दृश्य और अदृश्य - इन सभी को सहजता से एक-दूसरे से जोड़ा गया है। इस अवसर पर प्रो. अनामिका, प्रो. रेखा सेठी, कीर्ति सेनगुप्ता, प्रो. मालाश्री लाल तथा प्रो. अलका त्यागी ने वक्तव्य दिया। सभी अनुवादकों ने अपने अनूदित कार्य प्रस्तुत किए।

साभार : प्रो. रेखा सेठी का फ़ेसबुक पेज

टोरोंटो में 'हिंदी महोत्सव 2025'

मई 2025 में टोरोंटो, स्थित सेंट पॉल हाई स्कूल में हिंदी संगठन कनाडा द्वारा आयोजित 'हिंदी महोत्सव 2025' का आयोजन किया गया। समारोह में प्रवासी भारतीय समुदाय के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और सभागार पूरी तरह भरा रहा।

महोत्सव में रामलीला नाट्य-मंचन, लोक-संगीत, पारंपरिक और आधुनिक नृत्य प्रस्तुतियाँ, कविता-पाठ तथा बाल-कविता प्रतियोगिता आयोजित की गईं। कार्यक्रम ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत की विविधता और गहनता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। स्थानीय हिंदी विद्यालयों, सांस्कृतिक समूहों और कलाकारों की सक्रिय सहभागिता ने महोत्सव को समृद्ध बनाया। यह महोत्सव टोरोंटो में हिंदी भाषा और भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रचार-प्रसार के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

स्रोत : https://www.facebook.com/groups/1129042790797053/posts/2425190417848944/?utm

काठमांडू में हिंदी साहित्य उत्सव

28 जून, 2025 को भारतीय राजदूतावास, काठमांडू द्वारा मासिक हिंदी साहित्य उत्सव के तहत एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी साहित्य के तीन महान लेखकों - बाबू देवकी नंदन खत्री, बंकिम चंद्र चटर्जी और विष्णु प्रभाकर को याद किया गया। कार्यक्रम में नेपाल के प्रतिष्ठित हिंदी विद्वानों ने इन साहित्यकारों के जीवन और कृतियों पर अपने विचार साझा किए तथा हिंदी साहित्य में उनके अमूल्य योगदान का रेखांकन किया। काठमांडू स्थित विभिन्न विद्यालयों के छात्रों ने इन साहित्यकारों की रचनाओं का पाठ किया और हिंदी साहित्य के प्रति अपना लगाव प्रदर्शित किया। भारतीय राजदूतावास तथा राजदूतावास के प्रतिनिधियों ने कहा कि यह आयोजन नेपाल में हिंदी साहित्य के प्रति युवाओं की रुचि को प्रोत्साहित करेगा और साहित्यिक विमर्श को बढ़ावा देगा।

स्रोत : भारतीय दूतावास, काठमांडू, नेपाल की वेबसाइट

15वाँ हिंदी भाषा संवर्धन शिविर

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के हैदराबाद केंद्र द्वारा 1 अप्रैल से 12 अप्रैल, 2025 तक 15वाँ हिंदी भाषा संवर्धन शिविर आयोजित किया गया।

शिविर का उद्घाटन केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील त्रिपाठी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि प्रो. सुरेन्द्र दुबे रहे और मुख्य वक्ताओं में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील त्रिपाठी, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के अधिकारी, प्राचार्य और अन्य शिक्षाविद शामिल थे। शिविर के दौरान प्रतिभागियों को हिंदी में लेखन और वाचन का अभ्यास तथा संवाद का अभ्यास कराया गया। कुल 51 प्रतिभागियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

साभार : केंद्रीय हिंदी संस्थान की वेबसाइट

आभासी कार्यक्रम

हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि

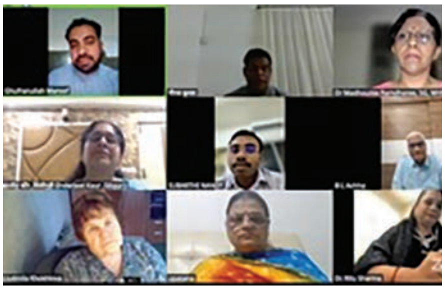

5 अप्रैल, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 24' आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत-वक्तव्य के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अफ़गानिस्तान के छात्र मलिक मुहम्मद ने नंगरहार विश्वविद्यालय एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन की अपनी यात्रा के विषय में बताया। जागृति हिंदी पाठशाला, दक्षिण अफ़्रीका की छात्रा तनुषा विजायन ने उषा शुक्ला की कविता 'प्रवासी हिंदी' का पाठ किया। गुरु नानक पब्लिक स्कूल, सिलीगुड़ी, भारत से सुबार्थी नंदी ने जैनेन्द्र कुमार के निबंध-संग्रह 'आरोह' में प्रतिपादित मूल्यों के हनन पर बात की। हिंदी प्राध्यापक ग़ुफ़रानुल्लाह मारूफ़ ने बताया कि अफ़गानिस्तान में हिंदी फ़िल्मों के कारण छात्र हिंदी के प्रति विशेष रुचि रखते हैं। श्रीमती चंपा वशिष्ठमुनि ने प्रो. उषा शुक्ला की पुस्तक 'दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी की संघर्ष गाथा' की चर्चा की। भारत से इन्द्रजीत कौर ने बताया कि वे कहानियों का नाट्य-रूपांतरण एवं मंचन करके बच्चों में साहित्य के प्रति रुचि जगाती हैं। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री बी.एल. आच्छा ने कहा कि यदि अच्छे पाठ्यक्रमों की संरचना की जाए तथा छात्रों को अच्छी कहानियों के साथ जोड़ा जाए, तो विद्यार्थियों में हिंदी के प्रति रुचि अवश्य पैदा होगी। अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन, नीदरलैंड्स की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने आभार प्रकट किया तथा विश्व हिंदी सचिवालय के पुस्तकालय अधिकारी, श्री नीरज कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया।

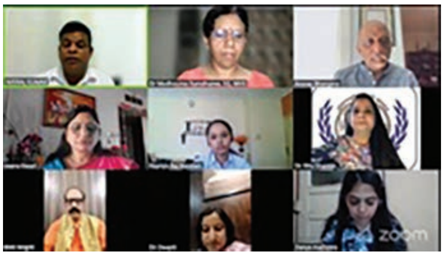

10 मई, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 25' आयोजित हुआ। नाइजीरिया से रान्या राज नंदनी ने संत कबीरदास के दोहों तथा मीराबाई के भक्ति पदों का भावार्थ प्रस्तुत किया। इजिप्ट से असमा महमूद अलवकील ने हिंदी की अपनी शैक्षिक यात्रा पर प्रकाश डाला। भारत से दान्या मल्होत्रा ने डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'मिस्टर अभिमन्यु' नामक नाटक का सारांश प्रस्तुत किया। इंडियन लैंग्वेज स्कूल, नाइजीरिया से वीणा तिवारी ने निर्गुण-भक्ति परंपरा के प्रमुख कवियों की चर्चा की। मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, इजिप्ट से गुलनाज़ आज़मी ने कहा कि हम अपने विद्यार्थियों को भाषा उसी तरह सिखाते हैं, जैसे एक माँ अपने बच्चे को उंगली पकड़कर चलना सिखाती है। हिंदू कॉलिज, अमृतसर, भारत से डॉ. दीप्ति ने 'मिस्टर अभिमन्यु' नामक नाटक का विश्लेषण किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में हिंदी आंदोलन परिवार, महाराष्ट्र, भारत से श्री संजय भारद्वाज ने लेखन की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि "जब आँखन की देखी, कागज़ की लेखी बनती है, तब साहित्य का जन्म होता है।" अर्थात् वास्तविक साहित्य वही है, जो जीवन के अनुभवों से उपजता है, न कि कल्पना या पुस्तकीय ज्ञान से।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत-वक्तव्य दिया। डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने आभार-प्रदर्शन किया तथा श्री नीरज कुमार ने संचालन किया।

हिंदी में अभिव्यक्ति

19 अप्रैल, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी में अभिव्यक्ति' के 24वें संस्करण का आयोजन किया, जिसकी शुरुआत विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत-वक्तव्य से हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) के निदेशक, प्रोफ़ेसर दिनेश प्रसाद सकलानी ने कहा कि "कोई भी भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह समाज और संस्कृति के विभिन्न आयामों का प्रतिनिधित्व करती है।" सिंगापुर से कियांश कुणाल ने एक कविता तथा कुछ मुहावरों को प्रस्तुत किया। नाइजीरिया से इमरान खान जोगना ने महात्मा गांधी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' तथा प्रसिद्ध देशभक्ति गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगो' का गायन किया। मलेशिया से श्रीमती नीरा नारायणन ने कहा कि वे बॉलीवुड फ़िल्मों का सहारा लेकर हिंदी सीख रही हैं। विश्व साहित्य सेवा संस्थान, सिंगापुर की अध्यक्षा अनुसूया साहू ने मीडिया पर भाषा की गरिमा बनाए रखने की ज़िम्मेदारी पर बात की। दोस्ताना एसोसिएशन, नाइजीरिया के अध्यक्ष, औवल यूसुफ़ अलीयू ने 'मर्द', 'करण-अर्जुन', 'जानवर' आदि फ़िल्मों के माध्यम से हिंदी सीखने के अपने अनुभव के बारे में बताया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, मलेशिया की हिंदी शिक्षिका, यामिनी जोशी ने बताया कि वे कई दिलचस्प और आकर्षक तकनीकों का उपयोग करके छात्रों को स्वर-व्यंजन, रंगों के नाम, दिनों के नाम, गिनती, लिंग भेद, क्रिया आदि सिखाती हैं। 'हिंदी से प्यार है', अमेरिका के संस्थापक, श्री अनूप भार्गव ने धन्यवाद-ज्ञापन किया तथा श्री नीरज कुमार ने संचालन किया।

21 जून, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 26' विषयक आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने सभी का स्वागत किया। रोमानिया की मिरेला क्रिस्टिया ने बताया कि उन्होंने शाहरुख़ खान की फ़िल्मों से हिंदी सीखना आरंभ किया। सऊदी अरेबिया से शाहन ए सईद ने हिंदी के सांस्कृतिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। मॉरीशस के चिराग मंगल ने ईश्वर के गुणों पर कविता प्रस्तुत की और उसका अंग्रेज़ी अनुवाद किया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, रोमानिया से भालचंद्र ढेकाणे ने हिंदी के व्याकरणिक पहलुओं पर बात की। सऊदी अरेबिया से असद खान ने बच्चों को हिंदी में अक्षरों, शब्दों और उनके अर्थों व प्रयोगों से परिचित कराने के अपने अनुभव बताए। मॉरीशस से निठालिया मंगल ज्योति देवी ने गीत, चित्र, अभिनय, नृत्य और बोलचाल के माध्यम से हिंदी सिखाने पर बल दिया। सेवानिवृत्त हिंदी शिक्षिका, श्रीमती ऋता सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भावों की स्पष्ट और सजीव अभिव्यक्ति होनी चाहिए। श्री नीरज कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहाचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

('हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि' तथा 'हिंदी में अभिव्यक्ति' आभासी कार्यक्रमों के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल: https://www.youtube.com/@worldhindisecretariat पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साक्षात्कार

21 अप्रैल, 2025 को मॉरीशस ब्रॉड्कास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'न्यूज़ीलैंड में हिंदी की स्थिति' विषय पर 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया गया। कार्यक्रम की अतिथि रहीं न्यूज़ीलैंड के वैलिंग्टन हिंदी विद्यालय की अध्यक्षा श्रीमती सुनीता नारायण। उन्होंने बताया कि प्राथमिक स्कूलों में कन्वर्सेशनल तौर पर बोलचाल की भाषा के रूप में 'फ़िज़ी हिंदी' पढ़ाई जाती है। न्यूज़ीलैंड में हिंदी की स्थिति पर उन्होंने बताया कि 2018 की जनगणना के अनुसार 2 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते हैं। इसके अतिरिक्त, यहाँ कई स्थानों पर सप्ताहांत में 10-12 हिंदी पाठशालाएँ चलाई जाती हैं। सरकारी सूचनाओं एवं दस्तावेज़ों का अनुवाद 'हिंदी' और 'फ़िजी हिंदी' दोनों में किया जाता है। फ़िजी में रेडियो एवं टेलीविजन के प्रसारण के संबंध में उन्होंने बताया कि यहाँ चौबीसों घंटे हिंदी भाषा में प्रसारण होता है। इनमें समाचार, फ़िल्में, संगीत, धारावाहिक, धार्मिक कार्यक्रम तथा सामुदायिक चर्चाएँ शामिल हैं। ये कार्यक्रम फ़िजी में हिंदी भाषा की लोकप्रियता और उपयोगिता को दर्शाते हैं। श्री धनराज शम्भु ने इस साक्षात्कार के लिए श्रीमती सुनीता नारायण के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

5 मई, 2025 को 'हिंदी पुस्तक-पठन को बढ़ावा देने में अभिभावकों का योगदान' विषय पर 'क्षितिज' कार्यक्रम चला। अतिथि वक्ता मॉरिशस के हिंदी शिक्षक डॉ. सोमदत्त काशीनाथ ने बताया कि यदि अभिभावक बच्चों की उम्र और रुचि के अनुरूप कहानियाँ, कविताएँ और लोककथाएँ उपलब्ध कराएँगे, तो वे पठन के प्रति बच्चों की दिलचस्पी प्रोत्साहित करेंगे। साथ ही, यदि घर पर नियमित पठन का वातावरण बनाया जाए, तो बच्चों में पुस्तक-पठन की आदत सहज रूप से विकसित की जा सकती है। हिंदी पुस्तक-पठन गतिविधि में भाग लेने के अपने अनुभव को साझा करते हुए छात्रा सान्वी ने कहा कि इतने बड़े समूह के सामने कहानी पढ़कर सुनाना एक अत्यंत सुखद अनुभव रहा। कहानी-पठन में उनका आत्मविश्वास बढ़ा और वे हिंदी भाषा से सहज रूप से जुड़ पाईं। इस साक्षात्कार के लिए श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने डॉ. सोमदत्त काशीनाथ (अभिभावक) और उनकी पुत्री, सान्वी के प्रति आभार प्रकट किया।

2 जून, 2025 को 'हिंदी भाषा के माध्यम से आयुर्वेद चिकित्सा' विषय पर 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया गया। डॉ. सुजाता आर्या इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रहीं। डॉ. आर्या ने बताया कि हिंदी माध्यम में आयुर्वेद चिकित्सा की शिक्षा सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से शुरु हुई थी तथा इस संस्थान की स्थापना स्वामी श्रद्धानंद द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रेरणा से की गई थी। विज्ञान और आयुर्वेद की पढ़ाई हिंदी माध्यम में प्रारंभ होने से न केवल ज्ञान-संप्रेषण सरल हुआ, बल्कि भारत की सांस्कृतिक एवं चिकित्सकीय धरोहर को जन-जन तक पहुँचाने में भी सफलता मिली। डॉ. शशि दुकन ने इस साक्षात्कार के लिए डॉ. सुजाता आर्या को धन्यवाद दिया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी सचिवालय की औपचारिक वेबसाइट https://vishwahindi.com/new/# के 'ओडिओ' भाग पर उपलब्ध है।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

सूरीनाम हिंदी परिषद् में 'सादगी' काव्य-संग्रह का लोकार्पण

17 मई, 2025 को सूरीनाम हिंदी परिषद् के बी. जदुनाथमिसीर सभागार में श्रीमती लैलावती लालाराम-हरद्वारसिंह का काव्य-संग्रह 'सादगी' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में संचालिका जोती महादेवमिसीर ने उपस्थित जनों का हार्दिक स्वागत किया। इसके बाद इंदिरा रामदीन ने कवयित्री के जीवन और कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया। भारत के राजदूत, महामहिम श्री सुभाष प्रसाद गुप्ता ने कविता और साहित्य के महत्त्व को रेखांकित करते हुए स्वरचित कविता का पाठ किया। स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डॉ. सोमवीर आर्य ने सूरीनाम हिंदी परिषद् के अध्यक्ष श्री एस. प्रमसुख और श्रीमती शर्मिला रामरतन ने क्रमिक रूप से कव्य-संग्रह के विमोचन पर कवयित्री को बधाई दी और अपनी शुभकामनाएँ प्रकट कीं। कारमेन सोमाई, संधिया भग्गो और राजेश ने काव्य-वाचन किया। प्रहतिमा अजोदिया द्वारा अपनी आजी पर प्रस्तुत मार्मिक सरनामी कथा ने सभी को भावुक कर दिया। श्री श्याम जानकी ने एक मधुर गीत से लोगों को आनंदित किया। इसके बाद पुस्तक का लोकार्पण किया गया और उपस्थित अतिथियों को एक प्रति भेंट की गई।

साभार : सूरीनाम हिंदी परिषद् का फ़ेसबुक पेज

आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों का लोकार्पण

14 जून, 2025 को आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा श्री पुरुषोत्तम तिवारी की 'नीरव निनाद', सुश्री निरुपमा खरे की 'मन बंजारा' और प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री कौशल किशोर चतुर्वेदी का व्यंग्य-संग्रह 'मोटे पतरे सबई तो बिकाऊ है' का लोकार्पण किया गया।

यह कार्यक्रम आईसेक्ट पब्लिकेशन, वनमाली सृजन पीठ एवं स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय, भोपाल के संयुक्त तत्त्वावधान में दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के राज सदन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि 'अक्षरा' के संपादक और पूर्व वरिष्ठ आईएएस अधिकारी श्री मनोज श्रीवास्तव ने तीनों पुस्तकों पर समीक्षात्मक टिप्पणी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता वनमाली सृजन पीठ के निदेशक श्री मुकेश वर्मा ने की। लोकार्पित पुस्तकों की समीक्षा श्री बलराम गुमास्ता, सुश्री कल्पना विजयवर्गीय और श्री घनश्याम मैथिल अमृत ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विशाखा राजूरकर ने किया और स्वागत-वक्तव्य आइसेक्ट पब्लिकेशन के वरिष्ठ प्रबंधक श्री महीप निगम ने दिया। वनमाली सृजन पीठ की राष्ट्रीय संयोजक एवं आईसेक्ट पब्लिकेशन की प्रबंधक सुश्री ज्योति रघुवंशी ने आभार व्यक्त किया।

साभार : आईसेक्ट पब्लिकेशन का फ़ेसबुक पेज

पारामारिबो में 'सूरीनाम की चयनित रचनाएँ' का विमोचन

26 मई, 2025 को स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केन्द्र, पारामारिबो, सूरीनाम में केन्द्र की पूर्व छात्रा शर्मिला रामरतन की पुस्तक 'सूरीनाम की चयनित रचनाएँ' का विमोचन किया गया। इसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल के टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र के निदेशक, डॉ. जवाहर कर्नावट उपस्थित रहे। इस अवसर पर भारतीय दूतावास, सूरीनाम के चार्ज द अफ़ेयर, प्रेम सेलवाल (द्वितीय सचिव), केन्द्र के निदेशक डॉ. सोमवीर आर्य (द्वितीय सचिव) और सूरीनाम हिंदी परिषद् के अध्यक्ष श्री एस. प्रमसुख उपस्थित थे।

साभार : सूरीनाम हिंदी परिषद् का फ़ेसबुक पेज

वर्जिनिया में डॉ. हरीश नवल की पुस्तकों का लोकार्पण

28 जून, 2025 को डैलस सीनियर सेंटर, वर्जिनिया में 'अद्विक पब्लिकेशन' भारत द्वारा प्रकाशित प्रख्यात साहित्यकार डॉ. हरीश नवल की दो पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। पहली पुस्तक 'ज़मीर ज़िंदा रहेगा' एक पूर्णकालिक नाटक है, जो कश्मीर के आतंकवाद की पृष्ठभूमि पर रचित है। इसमें वहाँ के उन युवाओं को केंद्रित किया गया है, जो ज़बरदस्ती आतंकवाद में धकेले जाने के विरुद्ध हैं। दूसरी पुस्तक 'एक रात एक महाराजा के साथ' में प्रसिद्ध राजचिकित्सक और भूपेन्द्र तिब्बिया कॉलिज के प्रिंसिपल रहे पं. त्रिलोकनाथ आज़म के अनूठे संस्मरणों को प्रस्तुत किया गया है।

इन पुस्तकों पर अमेरिका के अलग-अलग भू-भागों पर गोष्ठियाँ भी आयोजित होने वाली हैं।

साभार : अद्विक पब्लिकेशन का फ़ेसबुक

ग्रेटर नोएडा में साहित्यिक समागम एवं पुस्तक-विमोचन समारोह

11 मई, 2025 को ग्रेटर नोएडा में हिंदी लेखक संघ और अद्विक पब्लिकेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में एक साहित्यिक समागम एवं

पुस्तक-विमोचन समारोह का आयोजन सीमा सिंह जी के निवास-स्थान पर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रसिद्ध कथाकार संदीप तोमर जी की कहानी-संग्रह 'प्रेम गणित' और अन्य कहानियों का विमोचन किया गया। श्री सुभाष नीरव और डॉ. स्वाति चौधरी कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रहे। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री बलराम अग्रवाल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री किशोर श्रीवास्तव एवं श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी की गरिमामयी उपस्थिति रही। युवा लेखिका निशा भास्कर एवं कथाकार सन्दीप तोमर द्वारा मंच-संचालन किया गया। उपस्थित सभी रचनाकारों द्वारा विभिन्न विधाओं - लघुकथा, कविता, ग़ज़ल, दोहे, संस्मरण, मुक्तक आदि पर रचनाएँ पढ़ी गयीं।

साभार : अद्विक पब्लिकेशन का फ़ेसबुक

कथेतर विधा में हिंदी की पहली ग्राफ़िक किताब

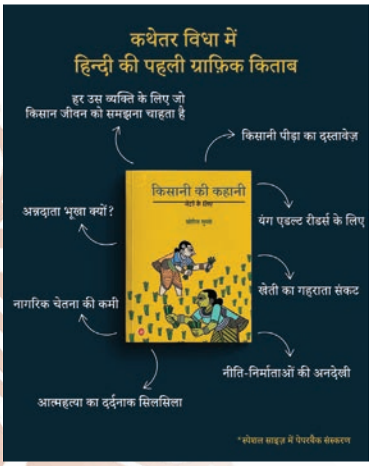

कथेतर विधा में हिंदी की पहली ग्राफ़िक किताब अब उपलब्ध है। किसान जीवन को समझने के लिए सोरित गुप्तो की किताब 'किसानी की कहानी : बेटी के लिए' यहाँ से प्राप्त की जा सकती है :

राजकमल : https://tinyurl.com/mr9asthz
अमेज़ॉन : https://amzn.in/d/iJ0FOfH
फ़्लिपकार्ट : https://tinyurl.com/y9bh62vp
साभार : राजकमल प्रकाशन समूह का फ़ेसबुक, 24 जून, 2025

अबु धाबी में 'प्रत्यूष - एक नई सुबह' पत्रिका का लोकार्पण

'रचनात्मकता ही जीवन को सजीव एवं उद्देश्यपूर्ण बनाती है।' - इसी विचार को केंद्र में रखते हुए भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के हिंदी विभाग द्वारा संपादित त्रैमासिक पत्रिका 'प्रत्यूष - एक नई सुबह' के जून 2025 अंक का लोकार्पण श्री सूरज रामचंद्रन, उपाध्यक्ष, भारतीय विद्या भवन, मिडल ईस्ट के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस पत्रिका में संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत और बहरीन के विद्यालयों की सहभागिता शामिल है। इस अंक को विशेष रूप से 'प्रसार माध्यम' और 'पर्यावरण' जैसे समसामयिक एवं जागरूकता से जुड़े विषयों पर केंद्रित किया गया है। इस अंक के निर्माण में प्रधान संपादक के रूप में हेत्वी पटेल, संपादक के रूप में नंदिनी त्रिवेदी और सह-संपादक के रूप में ब्लेसि मेहता ने सराहनीय कार्य किया है। पत्रिका को https://heyzine.com/flip-book/a148b71e5d.html लिंक पर पढ़ा जा सकता है।

साभार : भवन्स अबु धाबी का फ़ेसबुक

बिहार में 'हिंदी नाटकों में दलित अस्मिता' पुस्तक का लोकार्पण एवं परिचर्चा

टी. पी. कॉलिज, मधेपुरा, बिहार में 9 जून 2025 को युवा समालोचक डॉ. विभीषण कुमार द्वारा लिखित आलोचनात्मक पुस्तक 'हिंदी नाटकों में दलित अस्मिता' का लोकार्पण समारोह सह पुस्तक परिचर्चा आयोजित की गई।

समारोह की अध्यक्षता प्रो. (डॉ.) उषा सिन्हा, प्रधानाचार्य, रमेश झा महिला कॉलिज, सहरसा ने की। कार्यक्रम में प्रो. (डॉ.) कैलाश प्रसाद यादव, प्रधानाचार्य, टी. पी. कॉलिज, मधेपुरा, बिहार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सिद्धेश्वर कश्यप, एसोसिएट प्रोफ़ेसर (हिंदी), पी.जी. सेंटर, सहरसा ने पुस्तक की विषयवस्तु पर अपने विचार रखे। विशिष्ट अतिथि सह समीक्षक के रूप में विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. विनय कुमार चौधरी तथा विभागाध्यक्ष डॉ. दीपक कुमार गुप्ता ने हिंदी आलोचना में पुस्तक के योगदान पर टिप्पणी की। समारोह का संचालन पी.जी. सेंटर, सहरसा के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (हिंदी) डॉ. श्रीमंत जैनेन्द्र ने किया।

स्रोत : बी.एन.एम.यू. संवाद

सम्मान एवं पुरस्कार

58वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने 16 मई, 2025 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक समारोह में संस्कृत विद्वान जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी को 58वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया। महामहिम राष्ट्रपति ने जगद्गुरु रामभद्राचार्य को बधाई दी। उन्होंने ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए गुलज़ार को भी बधाई दी, जो पुरस्कार समारोह में शामिल नहीं हो सके। राष्ट्रपति ने कहा कि साहित्य समाज को जोड़ता भी है और जगाता भी है। 19वीं सदी के सामाजिक जागरण से लेकर 20वीं सदी के हमारे स्वतंत्रता संग्राम तक, कवियों और रचनाकारों ने जन-जन को जोड़ने में महानायकों की भूमिका निभाई है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित 'वंदे मातरम' गीत लगभग 150 वर्षों से भारत माता की संतानों को जागृत करता रहा है और सदैव करता रहेगा। वाल्मीकि, व्यास और कालिदास से लेकर रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे शाश्वत कवियों की रचनाओं में हमें जीवंत भारत का स्पंदन महसूस होता है । यह स्पंदन ही भारतीयता का स्वर है।

राष्ट्रपति ने 1965 से विभिन्न भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्यकारों को पुरस्कृत करने के लिए भारतीय ज्ञानपीठ ट्रस्ट की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार के चयनकर्ताओं ने श्रेष्ठ साहित्यकारों का चयन किया है तथा इस पुरस्कार की गरिमा का संरक्षण और संवर्धन किया है।

राष्ट्रपति ने कहा कि ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित आशापूर्णा देवी, अमृता प्रीतम, महादेवी वर्मा, कुर्रतुल-ऐन-हैदर, महाश्वेता देवी, इंदिरा गोस्वामी, कृष्णा सोबती और प्रतिभा

राय जैसी महिला रचनाकारों ने भारतीय परंपरा और समाज को विशेष संवेदनशीलता के साथ अनुभव किया तथा साहित्य को समृद्ध किया। उन्होंने कहा कि हमारी बहनों और बेटियों को इन महान् महिला रचनाकारों से प्रेरणा लेकर साहित्य-सृजन में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए तथा हमारी सामाजिक सोच को और अधिक संवेदनशील बनाना चाहिए।

महामहिम राष्ट्रपति ने कहा कि श्री रामभद्राचार्य जी श्रेष्ठता का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया है। दृष्टि बाधित होने के बावजूद उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से साहित्य और समाज की असाधारण सेवा की है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि उनके यशस्वी जीवन से प्रेरणा लेकर आने वाली पीढ़ियाँ साहित्य-सृजन, समाज-निर्माण और राष्ट्र-निर्माण के सही मार्ग पर आगे बढ़ती रहेंगी।

साभार : भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू की औपचारिक वेबसाइट

अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक परिचर्चा एवं सम्मान-समारोह

हिंदी साहित्य को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से हिंदी अकादमी, मुंबई तथा इंडियन लिटरेरी एंड आर्ट सोसाइटी ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया (ILASA) के संयुक्त तत्त्वावधान में 07 मई, 2025 को ऑस्ट्रेलिया के सिडनी स्थित जुबिली हॉल, पार्लियामेंट हाउस में एक अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक परिचर्चा एवं सम्मान- समारोह का सफल आयोजन किया गया।

इस गरिमामयी समारोह की मुख्य अतिथि ऑस्ट्रेलिया की संसद सदस्य माननीय जूलिया फ़िन (सिडनी) रहीं। उन्होंने अपने संबोधन में हिंदी को विश्व की एक समृद्ध भाषा बताते हुए हिंदी साहित्यकारों एवं संस्थाओं द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

कार्यक्रम का संयोजन इंडियन लिटरेरी एंड आर्ट सोसाइटी ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया की संस्थापक निदेशक, श्रीमती रेखा राजवंशी द्वारा किया गया। आयोजन की ज़िम्मेदारी हिंदी अकादमी, मुंबई (भारत) के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. प्रमोद पांडेय ने निभाई। कार्यक्रम के दौरान हिंदी साहित्य और प्रवासी लेखन पर सारगर्भित परिचर्चा हुई। साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले लेखकों को सम्मानित भी किया गया।

साभार : https://www.facebook.com/people/Indian-Literary-and-Art-Society-of-Australia-IncILASA/100068870455731/?locale=sr_RS

तेजेन्द्र शर्मा को "फ़ादर कामिल बुल्के साहित्यिक पुरस्कार"

बेल्जियम के कोर्ट्रिक में 15 जून, 2025 को आयोजित यूरोपीय साहित्य सम्मेलन में ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध कथाकार श्री तेजेन्द्र शर्मा को उनके साहित्यिक योगदान के लिए "फ़ादर कामिल बुल्के साहित्यिक पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। पुरस्कार भारतीय दूतावास, ब्रुसेल्स के काउंसलर श्री वी. नारायनन ने प्रदान किया।

भारतीय मूल के लेखक, कवि, नाटककार, कहानीकार और पत्रकार श्री तेजेंद्र शर्मा, इंदु शर्मा स्मृति ट्रस्ट के संस्थापक, कथा यूके के महासचिव और हिंदी ऑनलाइन पत्रिका 'पुरवाई' के संपादक हैं। 2017 में उन्हें ब्रिटेन की महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय द्वारा MBE (ब्रिटिश साम्राज्य सदस्य) सम्मान दिया जा चुका है। उनकी साहित्यिक उपलब्धियों का रेखांकन करते हुए काउंसलर श्री वी. नारायनन ने उन्हें सम्मानित किया।

साभार : श्री तेजेन्द्र शर्मा के फ़ेसबुक पेज से

साहित्य अकादेमी द्वारा युवा एवं बाल साहित्य पुरस्कार 2025

18 जून, 2025 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने वर्ष 2025 के प्रतिष्ठित 'युवा पुरस्कार' तथा 'बाल साहित्य पुरस्कार' के विजेताओं की घोषणा की। यह घोषणा अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की। बैठक में 23 युवा लेखकों की पुस्तकों एवं 24 बाल साहित्यकारों के लिए पुरस्कार 2025 अनुमोदित किए गए। इन पुस्तकों को त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल ने निर्धारित चयन प्रक्रिया का पालन करते हुए पुरस्कार हेतु चुना।

पार्वती तिर्की को 'फिर उगना' कविता-संग्रह के लिए 'साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2025' प्रदान किया गया तथा सुशील शुक्ल को 'एक बटे बारह' पुस्तक के लिए पुरस्कृत किया गया।

साभार : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट

सर्नामी - राष्ट्रीय महत्त्व की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर

2 मई, 2025 को स्टिचिंग सूरीनाम हिंदी परिषद् ने माननीय मंत्री ओरी के हाथों सर्नामी (सूरीनाम हिंदी) को सूरीनाम की सूची में आधिकारिक रूप से दर्ज करने का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। स्टिचिंग सूरीनाम हिंदी परिषद् को यह सम्मान देते हुए माननीय मंत्री ने भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस

मूल्यवान धरोहर के संरक्षण में सरकार की सक्रिय भागीदारी का आश्वासन दिया।

श्री सत्यानंद प्रमसुख, सूरीनाम हिंदी परिषद् की रिपोर्ट

श्रद्धांजलि

डॉ. कमल किशोर गोयनका

हिंदी के वरिष्ठ व प्रख्यात साहित्यकार डॉ. कमल किशोर गोयनका का दिल्ली में मंगलवार 1 अप्रैल, 2025 को निधन हो गया। वे कई साल केंद्रीय हिंदी संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार में बतौर उपाध्यक्ष रहे हैं। डॉ. गोयनका ने दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्राध्यापक के तौर पर करीब 40 साल अध्यापन कार्य किया। उन्होंने कई युवाओं की पढ़ाई पूरी कराने में योगदान दिया है। वे डीयू के हिंदी अनुसंधान परिषद् के आजीवन सदस्य रहे। डॉ. गोयनका को भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता का 'नथमल भुवालका पुरस्कार' दिया गया। हिंदी अकादमी, दिल्ली से उन्हें दो बार सम्मानित किया गया। 1998 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'साहित्य भूषण' पुरस्कार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा का 'पं. राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार', 2008 में 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार', 2011 में 'स्व. विष्णु प्रभाकर पुरस्कार', 2011 में साहित्य अकादेमी, भोपाल द्वारा 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना पुरस्कार', अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच द्वारा 'भावरमल सिंघी सम्मान', 2014 में के.के. बिड़ला फ़ाउंडेशन का 'व्यास सम्मान' आदि से नवाज़ा गया है। गोयनका जी उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के साहित्य के सर्वोत्तम विद्वान शोधकर्ता माने जाते हैं। मुंशी प्रेमचंद पर उनकी अनेकों पुस्तकें व लेख प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने प्रेमचंद के हज़ारों पृष्ठों के लुप्त व अज्ञात साहित्य को खोजकर सहेजा है। उन्होंने प्रेमचंद के मूल दस्तावेज़ों, पत्रों, डायरी, बैंक पासबुक, फ़ोटोग्राफ़, पांडुलिपियों और तीन हज़ार वस्तुओं का संग्रह किया है। केंद्र सरकार के सहयोग से 1980 में 'प्रेमचंद शताब्दी' पर उन्होंने देश-विदेश में 'प्रेमचंद प्रदर्शनी' कराई। साथ ही, एक फ़िल्म भी बनवाई। मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान द्वारा 1989, 1994 व 1996 में प्रेमचंद पर कई गोष्ठियाँ कराई।

साभार : जागरण

श्रीमती जय वर्मा

23 अप्रैल, 2025 को प्रख्यात साहित्यकार, संवेदनशील कवयित्री और 'पुरवाई' पत्रिका की संपादकीय मंडल की सदस्या श्रीमती जय वर्मा का निधन हो गया। श्रीमती जय वर्मा का जन्म मार्च 1950 में मेरठ के निकट जिवाना में हुआ था। वर्ष 1974 से वे ब्रिटेन में निवासरत थीं। पिछले 50 वर्षों से वे ब्रिटेन में भाषा एवं साहित्य की सेवा में कार्यरत रहीं। उन्होंने कहानी, कविता, संस्मरण एवं निबंध-लेखन के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान दिया है। वे 'काव्यरंग' की अध्यक्षा भी रही हैं। उल्लेखनीय है कि जय वर्मा ने नॉटिंघम को 'सिटी ओफ़ लिटेरेचर' घोषित करवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने नॉटिंघम में एक हिंदी शिक्षक के रूप में अपने करियर के दौरान तीस से अधिक पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद और रूपांतरण करने में योगदान दिया। अस्सी के दशक में, वे नॉटिंघम लैंग्वेज सेंटर में भाषा समन्वयक के रूप में कार्यरत थीं। उन्होंने 1976 से 1991 तक नॉटिंघम के कला निकेतन स्कूल में हिंदी पढ़ाई। 1976 में नॉटिंघम में बसने के बाद, वे विशेष रूप से कविता-लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हो गईं। उनकी कविताएँ और लेख विश्वभर की विभिन्न पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों में प्रकाशित होते रहे, मुख्यतः ब्रिटेन, अमेरिका, भारत और कनाडा में। उन्होंने 1980 के दशक के दौरान कई महीनों तक बीबीसी रेडियो नॉटिंघम का साप्ताहिक कार्यक्रम 'नवरंग' प्रस्तुत किया। जून 2016 में, साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए उनको 'आधारशिला पत्रिका पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उनके लेखन ने हिंदी को विश्व भाषा बनाने में सहायता की। उनको 'महादेवी वर्मा सम्मान' भी दिया गया।

साभार : विकिपीडिया

श्रद्धांजलि सभा

सेंटर फ़ॉर रोमा स्टडीज़ एंड कल्चरल रिलेशन्स - अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् ने 5 मार्च, 2025 को प्रवासी भवन में पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। उनकी अद्वितीय विद्वत्ता, रोमा समुदाय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता तथा हिंदी और भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन के प्रति उनका समर्पण अत्यंत प्रशंसनीय था। हिंदी साहित्य एवं समाज में ग्रामीण परिवेश से वैश्विक शिखर को छूने वाले वरिष्ठ साहित्यकार, लेखक, समाजशास्त्री पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि का निधन 19 फ़रवरी, 2025 को हुआ था। 'पद्मश्री' की उपाधि के अलावा उन्हें भारत सरकार, दिल्ली सरकार, बिहार शासन, उत्तर प्रदेश सरकार, हिमाचल प्रदेश, नागरी प्रचारिणी सभा, बालकल्याण संस्थान, विश्व हिंदी समिति, न्यूयॉर्क, यू.के. हिंदी समिति लंदन, हंगेरियन कांग्रेस, मॉरीशस सरकार, रोमा विश्व यूनियन सम्मान बेल्ग्रेड आदि देश-विदेश की अनेक सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। 'लाल सवेरा', 'एकादशी', 'भूदान दशक', 'प्रणय-पूर्णिमा', 'लहू के फूल' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

साभार : अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् का फ़ेसबुक पेज

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

सूचना

विज्ञापन

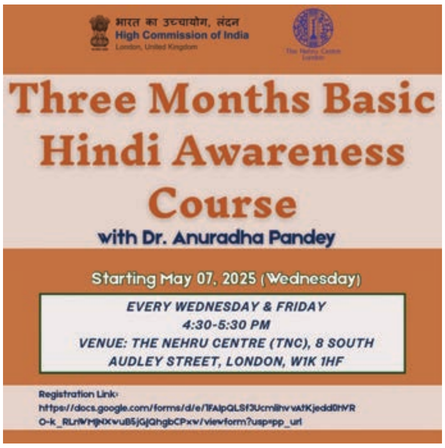

लंदन, यूनाइटेड किंगडम स्थित नेहरू सेंटर, भारतीय उच्चायोग, लंदन ने अपने सांस्कृतिक आउटरीच कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत 7 मई, 2025 (बुधवार) से तीन-माह का Basic Hindi Awareness Course प्रारम्भ करने की घोषणा की। यह पाठ्यक्रम सप्ताह में दो दिन - प्रत्येक बुधवार और शुक्रवार, सायं 4:30 बजे से 5:30 बजे तक आयोजित किया जाएगा। कोर्स का उद्देश्य स्थानीय भारतीय समुदाय, युवा वर्ग तथा हिंदी सीखने के इच्छुक गैर-हिंदी भाषियों में भाषा के प्रति रुचि जागृत करना और उन्हें हिंदी के आधारभूत ज्ञान से परिचित कराना है। इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए Google फ़ॉर्म (https://forms.gle/sSvwTy8Z3WSAXWh9A) के माध्यम से पंजीकरण अनिवार्य रखा गया है, जिसकी अंतिम तिथि 6 मई, 2025 निर्धारित की गई। यह पहल लंदन में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार की दिशा में नेहरू सेंटर की सतत एवं प्रभावी भूमिका को दर्शाती है।

साभार : नेहरू सेंटर लंदन की वेबसाइट

लंदन में विश्वरंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड का पोस्टर लोंच

13 अप्रैल 2025 को वातायन, लंदन द्वारा ऑक्सफ़ोर्ड बिज़नेस कॉलिज, लंदन में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विश्वरंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड का पोस्टर लोंच किया गया। रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति और विश्वरंग के संस्थापक श्री संतोष चौबे ने बताया कि यह ओलंपियाड 50 से अधिक देशों में आयोजित होने जा रहा है।

मुख्य अतिथि के रूप में बेरोनेस उषा पारशर, CBE, श्रीमती अनुराधा पाँडे, हिंदी एवं संस्कृति अधिकारी, भारतीय उच्चायोग, लंदन, वातायन यूरोप की संस्थापक दिव्या माथुर, डॉ. पद्मेश गुप्त और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। पोस्टर लोंच के साथ ही विश्वरंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड की शुरुआत का एक नया अध्याय खुला, जो हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने का महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

साभार : वातायन, लंदन का फ़ेसबुक पेज

हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन की नयी शाखा का औपचारिक उद्घाटन

हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन, मॉरीशस ने शनिवार, 20 मई 2025 को देश के पूर्वी क्षेत्र में स्थित प्लेन दे रोश गाँव की सरकारी पाठशाला में एक नयी हिंदी पाठशाला का औपचारिक उद्घाटन किया।

इस अवसर पर सार्वजनिक जन सेवा एवं प्रशासनिक सुधार मंत्री माननीय श्री राज पेंट्या मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव श्रीमती श्रुति पाठक, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी, हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन के प्रधान श्री प्रेमदीप चमन तथा फ़ेडरेशन से जुड़े अध्यापक गण भी उपस्थित थे।

माननीय मंत्री श्री राज पेंट्या ने हिंदी की पढ़ाई के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्रीमती श्रुति पाठक ने भारत और मॉरीशस के भाषायी संबंधों पर अपने विचार प्रकट किए। डॉ. माधुरी रामधारी ने हिंदी के प्रसार में बैठकाओं की भूमिका को रेखांकित किया और श्री प्रेमदीप चमन ने हिंदी के पठन-पाठन को बढ़ावा देने में फ़ेडरेशन की प्रतिबद्धता दोहराई।

साभार : हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन की रिपोर्ट

केंद्रीय हिंदी संस्थान अब डीम्ड विश्वविद्यालय

5 मई, 2025 को केंद्र सरकार, भारत ने केंद्रीय हिंदी संस्थान को डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा देने की घोषणा कर दी है। यह निर्णय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की सिफ़ारिश पर लिया गया। हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यरत संस्थान डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के बाद उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर पाएगा। इस दर्जे के साथ संस्थान हिंदी और भाषाविज्ञान के अतिरिक्त अन्य विषयों पर नए स्नातक व परास्नातक, पीएचडी, एमफ़िल, डीलिट आदि अकादमिक पाठ्यक्रम शुरू कर सकेगा। उक्त सभी विषयों में शोध-कार्यों को विशेष बल मिलेगा।

डीम्ड विश्वविद्यालय बनने से संस्थान से पढ़े विद्यार्थियों की डिग्री को किसी भी अन्य राज्य या देश के विश्वविद्यालय में मान्यता मिलेगी। वर्तमान में संस्थान में 100 सीटें विदेशी छात्रों के लिए और लगभग 275 सीटें स्वदेशी विद्यार्थियों के लिए हैं। नए विषयों में नए पाठ्यक्रम शुरू होने पर सीटें भी बढ़ेंगी। साथ ही, नए पदों का सृजन होगा।

साभार : आगरा जागरण / अमर उजाला

प्रधान संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
संपादक : डॉ. शुभंकर मिश्र
वरिष्ठ सहायक संपादक : श्री प्रकाश वीर
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups vishwahindisachivalay/

संपादकीय

हिंदी के प्रचार-प्रसार में रामकथा का महत्त्व

हिंदी भाषा के विकास और उसके व्यापक सामाजिक प्रसार में रामकथा की भूमिका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक, इन तीनों स्तरों पर अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। भारत जैसे बहुभाषी देश में किसी एक भाषा का जन-जन तक पहुँचना केवल प्रशासनिक या शैक्षिक प्रयासों से संभव नहीं होता, बल्कि इसके लिए ऐसे सांस्कृतिक माध्यमों की आवश्यकता होती है, जो लोगों के हृदय से जुड़ सकें। इस दृष्टि से रामकथा हिंदी के प्रचार-प्रसार की सबसे सशक्त सांस्कृतिक धुरी के रूप में सामने आती है।

रामकथा की मूल परंपरा संस्कृत में रचित वाल्मीकि रामायण से आरंभ होती है, किंतु हिंदी के संदर्भ में इसका निर्णायक मोड़ तब आता है, जब गोस्वामी तुलसीदास लोकभाषा अवधी में रामचरितमानस की रचना करते हैं। यह केवल एक साहित्यिक कृति नहीं थी, बल्कि भाषा के लोकतंत्रीकरण का ऐतिहासिक क्षण था। जिस कथा को अब तक विद्वानों और शास्त्रों की सीमा में समझा जाता था, वह जनसामान्य की भाषा में घर-घर पहुँच गई। इससे न केवल रामकथा लोकप्रिय हुई, बल्कि हिंदी की जनबोलियों को भी सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

तुलसीदास के बाद रामकथा लोकजीवन की अभिन्न अंग बन गई। मंदिरों में मानस-पाठ, गाँवों की चौपालों में कथा-कीर्तन और पारिवारिक संस्कारों में रामनाम, इन सबने भाषा को धार्मिक आस्था के साथ जोड़ दिया। जब कोई भाषा आस्था और परंपरा से जुड़ जाती है, तब उसका संरक्षण स्वाभाविक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी होता रहता है। इस प्रक्रिया में हिंदी केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं रही, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति का वाहक बन गई।

रामलीला की परंपरा ने हिंदी के मौखिक प्रचार को और अधिक सुदृढ़ किया। मंच पर बोले जाने वाले संवाद, चौपाइयाँ और दोहे लोगों की स्मृति में सहज ही बस जाते थे। शिक्षा के औपचारिक साधनों से वंचित समाज के बड़े वर्ग के लिए रामलीला हिंदी सीखने और समझने का जीवंत माध्यम बनी। भाषा यहाँ पुस्तकीय ज्ञान नहीं रही, बल्कि दृश्य, श्रव्य और भावनात्मक अनुभव बन गई। यही कारण है कि हिंदी की अनेक लोकोक्तियाँ, मुहावरे और नैतिक सूत्र रामकथा से जुड़े हुए हैं।

भक्ति आंदोलन की व्यापक धारा में भी रामकथा केंद्रीय प्रेरणा स्रोत रही। इस आंदोलन ने भाषा को एक विशिष्ट वर्ग की सीमा से निकालकर जनसाधारण के निकट पहुँचाया। भक्ति काव्य की परंपरा ने यह सिद्ध किया कि आध्यात्मिक अनुभव को व्यक्त करने के लिए लोकभाषा ही सबसे प्रभावी माध्यम हो सकती है। इससे हिंदी का सामाजिक दायरा और अधिक विस्तृत हुआ और भाषा जनचेतना का हिस्सा बनती चली गई।

आधुनिक काल में भी रामकथा ने हिंदी के प्रसार में नई भूमिका निभाई है। नाट्य-रूपांतरण, उपन्यास, बाल साहित्य, चित्रकथाएँ और विशेष रूप से टेलीविजन धारावाहिकों ने रामकथा को नई पीढ़ी तक पहुँचाया। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रसारित रामायण धारावाहिक ने जिस प्रकार हिंदी को शहरी और ग्रामीण - दोनों समाजों में समान रूप से लोकप्रिय बनाया, वह अभूतपूर्व था। यह मीडिया के माध्यम से भाषा-संवर्धन का एक प्रभावशाली उदाहरण रहा है।

प्रवासी भारतीय समाज में रामकथा का योगदान और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। जिन देशों में हिंदी औपचारिक शिक्षा की भाषा नहीं रही, वहाँ मंदिर, रामायण केंद्र, भजन मंडलियाँ और रामलीला समितियाँ हिंदी की जीवंत पाठशालाएँ बन गईं। इन समाजों में भाषा का संरक्षण केवल भाषाई आग्रह से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आत्मीयता से हुआ। रामकथा ने प्रवासी भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़े रखा और हिंदी को सांस्कृतिक पहचान का आधार बनाया।

आज के वैश्विक और डिजिटल युग में, जब भाषाएँ बाज़ार और तकनीक के दबाव में तेज़ी से बदल रही हैं, रामकथा जैसे सांस्कृतिक आख्यान भाषा को स्थायित्व और निरंतरता प्रदान करते हैं। वे यह स्मरण कराते हैं कि भाषा केवल संचार का उपकरण नहीं, बल्कि सामूहिक अनुभव, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक चेतना का माध्यम भी है।

यहाँ यह कहना उचित ही होगा कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के इतिहास में रामकथा केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन रही है। उसने भाषा को जनसाधारण के जीवन से जोड़ा, उसे भावनात्मक आधार दिया और पीढ़ियों तक हस्तांतरित होने वाली सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित किया। यदि आज हिंदी विश्व के अनेक देशों में जीवित और सक्रिय है, तो उसके पीछे रामकथा जैसी लोकजीवन से जुड़ी परंपराओं का मौन किंतु गहरा योगदान अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिए।

इन्हीं शब्दों के साथ विश्व हिंदी समाचार का यह अंक आपको समर्पित है, जिसका उद्देश्य पाठकों को वैश्विक हिंदी से जुड़ी विविध गतिविधियों, रचनात्मक पहलों और वैश्विक स्तर पर हो रहे प्रयासों से यथासंभव व्यापक, प्रामाणिक और सार्थक रूप में परिचित कराना है, ताकि हिंदी के प्रति जागरूकता, जुड़ाव और सहभागिता और अधिक सुदृढ़ हो सके। अस्तु! शुभम् भवतु!

भवदीय

डॉ. शुभंकर मिश्र

उपमहासचिव